India of Swami Vivekananda's Dreams
स्वामी विवेकानंद के स्वप्नों का भारत

Amrit Lal Chandrabhas
Asst.professor {political science}
Govt. L.C.S. College Ambagarh Chowki
Dist. Rajnandgaon
Chhattisgarh
Email. alchandrabhas888@gmail.com

प्रस्तावना :–

भारत की भूमि देवों की भूमि रही है, भारत विविध धर्मों का संगमस्थल रहा है। अनेक धर्म भारत में आये और भारतीय संस्कृति में रंग गये। विभिन्न देवी देवता का निवास भारत में हमेशा से रहा है। यदि पृथ्वी पर ऐसा कोई देश है, जिसे हम पुण्य भूमि कह सके तो वह भारत है। भारत में अनेकों महापुरूषों का जन्म हुआ है। उन सबने भारत को महान् देश बनाने का प्रयास किया है। जिसमें भगवान राम, संन्त कबीर, संन्त तुलसी दास, गुरू नानक, स्वामी विवेकानंद, महात्मां गांधी, डॉ. भीम राव अम्बेडकर आदि महापुरूषों ने अपने–अपने ढंग से भारत भूमि को संवारने का काम किया है। इसी कारण इसे भारत माता के नाम से पुकारते है। इसमें स्वामी विवेकानंद एक अध्यात्मवादी, नैतिक विचारक, सृजनशील, सामाजिक सुधारवादी, मानवता का सच्चा सेवक, जो अपने सम्पूर्ण जीवन को समाज के सुधार एवं पुनरोद्धार में समर्पित कर दिया। स्वामी विवेकानंद ज्योति पुरूष रहे है, जो अपने ज्योति से भारत को ही नहीं सम्पूर्ण मानव जगत को प्रकाशित करने का प्रयास किया है। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व सम्पूर्ण विश्व के मानव जगत के लिये अनुकरणीय है। स्वामी विवेकानंद में वे सभी गुण समाहित थे, जो एक महा मानव में आवश्यक रूप से होनी चाहिये।

स्वामी विवेकानंद के जीवन परिचय :– युग पुरूष स्वामी विवेकानंद जी का जन्म कलकत्ता में 12 जनवरी सन् 1863 ई. में हुआ था। विवेकानंद जी के बचपन का नाम नरेन्द्र दत्त था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील थे। वे एक अच्छे विचारक, अति उदार, गरीबों के प्रति सहानुभूति रखने वाले थे। आपका परिवार धनी, कुलीन, व उदारता के लिये विख्यात था। इनके पिता पश्चिमी संस्कृति सभ्यता से प्रभावित थे, इस कारण से विवेकानंद को अंग्रजी शिक्षा में पढ़ाना चाहते थे, ताकि विवेकानंद अंग्रजी ढ़र्रे में चल सके। इनकी माता भुवनेश्वरी देवी धार्मिक विचारों की महिला थी। उनका अधिकांश समय पूजा पाठ में व्यतीत किया करती थी। भगवान शिव उसके प्रमुख अराध्य देव था।

नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से ही तीब्र एवं कुशाग्र प्रवृत्ति का था और परमात्मा व अध्यात्म में ध्यान लगा हुआ था। इस हेतु अपनी ज्ञान पिपासा को शांत करने के लिये ब्रम्ह समाज में गये। किन्तु वहां अपने अंरात्मा के अंतःचक्षु को तृप्ति नहीं मिला। ब्रम्ह समाज के विचारकों से प्रेरित होकर भारत के विभिन्न धार्मिक ग्रंथ एवं आध्यात्मिक साहित्य का भी गुढ़ अध्ययन किया। ब्रम्ह समाज में आने के बाद उनके मन में संशय व संदेह के अनेक प्रश्न उठने लगे, तथा मन में विभिन्न प्रकार के वैचारिक अन्तर्द्वन्द्व चलने लगा। इसी अपनी वैचारिक बेचैनी को दूर करने के लिये रामकृष्ण परमहंस के सम्पर्क में आये। स्वामी विवेकानंद अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस से काफी प्रभावित हुये। उन्होने सीखा कि सारे जीवों में स्वयं परमात्मा का निवास है, इसलिये जो मनुष्य जरूरत मंदों की सेवा करता है, वही परमेश्वर की सच्ची सेवा एवं भक्ति करता है। अपने गुरू परमहंस के मृत्यु के बाद स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन व रामकृष्ण मठ की स्थापना की। विश्व में भारतीय दर्शन विशेषकर वेदान्त और योग शिक्षा को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, साथ ही ब्रिटिश भारत के दौरान राष्ट्रवाद को अध्यात्मवाद से जोड़ने का काम किया। इसके अतिरिक्त भारत में जातिवाद, शिक्षा, धर्म निरपेक्षता, मानवतावाद पर अपने विचार प्रस्तुत किया। विवेकानंद की शिक्षा पर उपनिषद्, गीता दर्शन, बुद्ध, ईसा मसीह के उपदेशों का प्रभाव पड़ा।

प्रमुख रचना :–

1. **ज्ञानयोग**

2. **कर्मयोग**
3. **राजयोग**
4. **भक्तियोग**
5. **गंगा से वोल्गा तक**
6. **पूरब से पश्चिम तक**
7. **मैं समाजवादी हूं**
8. **वेदांत फिलोसफी**

स्वामी विवेकानंद का विदेश यात्रा :–

स्वामी जी विचार था कि सम्पूर्ण देश का भ्रमण करके सैकड़ों प्रसिद्ध व्यक्तियों से वार्तालाप करके हिन्दू धर्म के उच्च सिद्धांतों का प्रचार किया जाय। जिससे विदेश के भी आध्यात्म प्रेमी भारतवर्ष की ओर आकर्षित हो तथा भारत के पढ़े लिखे नौजवान जो विदेशी चकाचौंध से अपनी संस्कृति और सभ्यता से विमुख हो रहे है, उनका आंख खुले। इसी अवसर पर मद्रास में उनको यह सूचना मिली कि अमरीका के शिकागों नगर में एक सर्व धर्म सभा होने वाली है। जिसमें अभी तक कोई सनातन हिन्दू धर्म की ओर से काई प्रतिनिधि भाग लेने नहीं गया है। स्वामी जी को अंतरात्मा से यह प्रेरणा मिली कि इस अवसर पर उनको अन्य धर्म वालों के समक्ष हिन्दू धर्म के झण्डे को ऊँचा करना चाहिये। उनके सभी मित्रों ने मिलकर स्वामी जी का समर्थन किया, और 31 मई 1893 को शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में जाने का निश्चय हो गया। धर्म संसद के मंच पर स्वामी विवेकानंद सितम्बर 1893 मंच पर बाएं से दाएं वीरचंद गांधी, अंगरिका धर्मपाल, स्वामी विवेकानंद, जी. बोनेट मौर्य आदि। 1893 में शिकागो शहर ने विश्व कोलंबियाई प्रदर्शनी की मेजबानी की, जो एक प्रारंभिक विश्व मेला था। दुनिया भर से इतने सारे लोग शिकागो आ रहे थे, कि इस अभूतपूर्व सभा का लाभ उठाने के लिये विश्व भर के कोन–कोने से लोग पहुच रहे थे। इस धर्म संसद की पहल स्वीडनबोर्गियाई आम आदमी और न्यायधीश चार्ल्स कैरोल बोनी की एक पहल थी। इस सम्मेलन की पहले अध्यक्ष जॉन हेनरी बैरो को नियुक्त किया गया। यह सम्मेलन 11 सितम्बर 1893 से 27 सितम्बर 1893 तक चली। स्वामी विवेकानंद 11 सितंबर को संसद के उद्घाटन सत्र में हिन्दू धर्म का प्रतिनिधित्व किया। हॉलाकि शुरू में घबराये हुए थे। मां सरस्वती को प्रणाम करते हुये अपने भाषन की शुरूआत किया ''अमेरिका की बहनों और भाइयों '' को मेरा नमस्कार के साथ अपना भाषण प्रारंभ किया। इन शब्दों के लिये उन्हें हजारों की भीड़ से स्टैंडिंग ओवेशन मिला, जो दो मिनट तक चला। जब चुप्पी बहाल हुयी तो उन्होंने संबोधन शुरू किया। उन्होंने '' दुनिया में भिक्षुओं के सबसे प्राचीन आदेश, संन्यासियों के वैदिक आदेश, एक धर्म जिसने दुनिया को सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति दोनों सिखाया है '' की ओर से सबसे कम उम्र के राष्ट्रों को बधाई दी।

कठिन शब्दावली :– सहिष्णुता, मानवतावाद, अध्यात्मवादी, सृजनशील आदि।

शोध प्रविधिः– इस शोध पत्र के लिये शोध सामग्री अधिकांश रूप से द्वितीयक स्रोतों से ग्रहण की गयी है। इसमें ऐतिहासिक विश्लेषण व वर्णात्मक दृष्टिकोण के साथ–साथ शोधकर्ता ने अपने व्यक्तिगत अनुभवों को भी स्थान दिया है। शोध सामग्री प्रसिद्ध पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं व समाचार पत्रों से प्राप्त की गई है।

उद्देश्य :–

1- स्वामी विवेकानंद के विचारों को समाज में जन–जन तक पहुचाना।
2- स्वामी विवेकानंद जी किस तरह के भारत अपने चिंतन में देखना चाहते थे इसको स्पष्ट करना।
3- स्वामी विवेकानंद जी हिन्दू समाज में व्याप्त बुराई का समूल नष्ट करना चाहते थे इसकी व्याख्या करना।
4- स्वामी विवेकानंद जी सामाजिक परिवर्तन के पक्षधर थे स्पष्ट करना।
5- स्वामी विवेकानंद जी के दर्शन में समाजवादी एवं क्रांतिकारी तत्व समाहित थे, उसे पुनः प्रकाश में लाना।
6- स्वामी विवेकानंद जी के हिन्दूवादी विचार को पुर्नस्थापित किया इसे प्रकाश में लाना।
7- स्वामी विवेकानंद जी के द्वारा भारत में युवा शक्ति को कैसे जगाया इसे स्पष्ट करना ।

स्वामी विवेकानंद जी तत्कालीन समाज के बुराई को दूर करना चाहते थे :–

स्वामी विवेकानंद जी ने भारतीय हिन्दू समाज में फैले हुये बुराई को दूर कर, हिन्दू समाज को उसके अतीत के गौरवशाली परम्परा से महिमामण्डित कर पुनः प्रतिष्ठित करना चाहते थे। जोकि एक बार पुनः विश्व के समक्ष अपने आदर्श को प्रस्तुत कर सके। स्वामी विवेकानंद जी का विचार है, कि व्यक्ति को उसके धर्म और आदर्श का बोध करवा कर उसे विकास का अध्यात्मिक वातावरण उत्पन्न कर अच्छा फल प्राप्त किया जा सकता है। अतः व्यक्ति के वैचारिक वातावरण तैयार करने पर उसके वाह्य आचरण अपने आप सामाजिक एवं धार्मिक नियमों के अनुसार तब्दिल हो जायेगा। उसे बाहरी दबाव बनाकर नियमों को उसके ऊपर लादने की

आवश्यकता नहीं पड़ेगी। स्वामी विवेकानंद विभिन्न प्रकार के बुराईयों से ग्रसित समाज की वर्तमान दयनीय दशा से अत्यंत चिंतित थे। नारियों के प्रति हो रहे अन्याय का उन्होंने खुलकर विरोध किया। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, पुरोहितवाद, चौकाधर्म, छूआछूत आदि। स्वमी जी कहते थे कि बाल विवाह जैसी राक्षसी परम्परा से यथासाध्य लड़ता रहुंगा। स्वामी विवेकानंद जी छूआछूत को सामाजिक पतन और दरिद्रता का मूल कारण मानते है। यही कारण है जिससे लोगों में आपसी तनाव एवं फुट पड़ा हुआ है। मानव समाज में जो सहयोग की भावना थी वह असहयोग में परिणीत हो गया। परस्पर सहयोग एवं परोपकारिता लुप्त हो गयी। वे आगे कहते है जो धर्म गरीबों के दुःख नही मिटा सकती वह अपने को धार्मिक कहलाने का काबिल नहीं, सिर्फ ''मझे मत छुओ, मुझे मत छुओ '' कहने से समाज का कल्याण नहीं हो पायेगा।

–:स्वामी विवेकानंद के स्वप्नों का भारतः–

स्वामी विवेकानंद के सामाजिक विचार :–

मनुष्य के मनुष्यत्व को पहचान कराना :– वेदान्त दर्शन के मत से मनुष्य ही जगत के सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। और यह कर्मभूमि पृथ्वी ही सर्वश्रेष्ठ स्थान है। क्योकि यहीं पर पूर्णत्व प्राप्त करने की सर्वोकृष्ट और सर्वाधिक संभ. ावना है। देव दूत या देवता आदि को भी पूर्ण होने के लिये इस संसार में मनुष्य जन्म ग्रहण करना पड़ा। यह मानव जीवन का एक महान् केन्द्र अद्भूत स्थिति और अद्भूत अवसर है। अतः मनुष्य की अनुपम दिव्यता आत्मप्रकाशन के माध्यम से ही प्रकट होता है। जो उसके व्यवहार एवं दिव्यता तथा कर्मों में दृष्टिगोचर होते रहता है। सूर्य को चमकने के लिये किसी माध्यम की जरूरत नहीं होती, पृथ्वी को घुमने के लिये प्रयास की जरूरत नहीं होती यह सब तो स्वभाविक रूप से अपने आप स्वभावतः हो जाता है। जिस प्रकार सुदूर आकाश में मेघराशि में पीछे छिपे हुये अव्यक्त और रहस्यमय को समझते रहे। वह हमारे निकट से भी निकट है, प्राणों का प्राण है, हमारा शरीर है, हमारी आत्मा है,– तुम्ही ''मैं'' हो और मैं ही ''तुम'' हो। यही सत्य है, तुम्हारा स्वरूप है इसी को अभिव्यक्त करो। तुम्हें पवित्र होना नहीं पड़ेगा। तुम तो स्वयं पवित्र ही हो, तुम्हें पूर्ण होना नहीं पड़ेगा – तुम तो पूर्ण ही हो।

शिक्षा के महत्व को स्वीकारना :– स्वामी विवेकानंद जी तत्कालीन समस्या का जड़ अशिक्षा और अज्ञानता तथा गरीबी को मानता है। इस कारण से शिक्षा के महत्व को प्रसारित करना और लोगों को जागृत करना ही महत्वपूर्ण है। स्वामी विवेकानंद जी का विश्वास था, कि उत्थान समाज के लोगों द्वारा समाज के निचले तबके को उपहार स्वरूप नहीं मिलना चाहिये। बल्कि उनके द्वारा स्वयं प्राप्त होना चाहिये। इसलिये एक स्थान पर कहते है, कि समाज में दबे कुचले और निचले वर्ग के लिये यदि हमारा कुछ कर्तव्य बनता है, तो वह यह है कि उन्हे शिक्षित करना उनकी खोई हुई वैयक्तिकता प्रदान करना।

गरीबी उन्मूलन :– भारत में गरीबी ही समस्त समस्याओं का मूल है। जिसके उन्मूलन के लिये स्वामी विवेकानंद जी पूरा जीवन लगा दिया। स्वामी विवेकानंद जी की संवेदना परिलक्षित होती है, उनकी इस कथन से '' मैने सम्पूर्ण भारत भ्रमण किया है, मेरे भाइयों मैने अपनी आंखों से भारत की अधिकांश जनता में व्याप्त गरीबी और दीनता देखा है। जिसे देखकर मैं अपने आंसूओं को रोक नहीं पाता, अब मुझे दृढ़ विश्वास हो गया है, कि बिना उनकी गरीबी और कष्टों को दूर किये धर्म की शिक्षा देना, उपदेश देना व्यर्थ है।

अस्पृश्यता का विरोध :– विवेकानंद ने भारतीय समाज में व्याप्त अस्पृश्यता पर कटु प्रहार किया है, वे जातियों में उच्चता व निम्नता को मिटाना चाहते थे। स्वामी जी कहते थे '' तुम्हारे मन में जो ईश्वर स्थित है, वही मेरे मन में भी है, फिर यह भेदभाव क्यों? यह असमानता क्यों? यह ऊंच नीच की भावना क्यों? स्वामी जी उच्च जातियों द्वारा निम्न जातियों के ऊपर किये जाने वाले शोषण के खिलाफ थे।

नारी समानता के लिये प्रयत्न :– स्वामी जी स्त्री पुरूष समानता के पक्षपाती थे। स्वामी जी का यह अडिग विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र को नारी जाति का सम्मान करना चाहिये। जो देश नारियों का सम्मान नहीं करते वह देश कभी भी सम्मान के पात्र नहीं है।

बाल विवाह का विरोध :– स्वामी जी के समय में बाल विवाह का प्रचलन जोरों पर था। इस पर उन्होनें बाल विवाह काा पुरजोर विरोध किया। बाल विवाह से ही असामयिक संन्तान की उत्पत्ति होती है। और बहुत कम उम्र में संतान उत्पन्न करने एवं उसके पालन पोषण करने से महिलाओं में शारीरिक कमजोरी देखने को मिलता है। इससे जनसंख्या में वृद्धि होती है, वह समाज के समृद्धि के लिये शुभ संकेत नहीं है।

स्वामी विवेकानंद के राजनीतिक विचार :– स्वामी जी को राजनीति में कोई विश्वास नहीं था और न ही राजनीतिक कार्यक्रम में भाग लेता था, फिर भी उनके भाषण में राजनीतिक दर्शन मिलता है।

राष्ट्रवाद के संबंध में विचार :– स्वामी जी धर्म एवं संस्कृति का दुहाई देकर सोये हुये भारत को उसके अतीत का परिचित कराया। उन्होनें भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं सनातन धर्म को पूरे विश्व में पहुंचा दिया। इस कारण से भारतीयों के मन में आत्म गौरव का सम्मान एवं राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हुआ। स्वामी जी के प्रचार

से हिन्दूओं में यह विश्वास की अनुभूति हुयी कि उन्हें किसी के सामने नतमस्तक हो कर झुकने की आवश्यकता नहीं है। भारत के राष्ट्रवाद आधार स्तंभ धर्म है। स्वामी जी को विश्वास था कि हमारी अध्यात्मिकता ही हमारा जीवन रक्त है। हमारा धर्म ही हमारा बल, हमारे राष्ट्रीय शक्ति है।

स्वतंत्रता संबंधी विचार :– स्वतंत्रता हमारे राजनीतिक समाज के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह किसी एक जाति, धर्म, वंश, अथवा वर्ग की बपौती नहीं है। यह तो मानव समाज के विकास का मूल मंत्र है। जिस समाज में, जिस देश में, स्वतंत्रता नहीं है, उस देश या समाज के समूल मानव जाति और राष्ट्र पतन की ओर चले जाते है। स्वामी जी ने स्वतंत्रता को मनुष्य का प्राकृतिक अधिकार माना है और कहा है कि समाज के समस्त सदस्यों को यह प्राप्त होना चाहिये। समाज के सभी सदस्यों को धन, शिक्षा, ज्ञान प्राप्त करने का अधिकार समान रूप से सभी को मिलना चाहिये। विचारगत एवं कार्यगत स्वतंत्रता जीवन कल्याण एवं विकास की एक मात्र शर्त है, ऐसे में जो सामाजिक बंधन विकास के मार्ग में रोड़ा उत्पन्न करता है, उसे समाप्त कर देना चाहिये। हमारे वेद एवं उपनिषद् में भी शारीरिक, मानसिक, अध्यात्मिक सभी प्रकार के स्वतंत्रता का समर्थन किया है।

समानता पर स्वामी जी का विचार :– स्वतंत्रता के साथ –साथ समानता पर भी अपना विचार प्रस्तुत किया है। यदि हमारा सामाजिक जीवन असमानता से ग्रसित हो तो राजनीतिक स्वतंत्रत का सुख प्राप्त नहीं हो सकता। भारतीय समाजिक जीवन में व्याप्त असमानता एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रबृत्ति को बढ़ावा देता है। जिसके कारण से हमारे सामाजिक एकता स्थापित कारने में समस्या उत्पन्न हो रही है। यही कारण है कि राष्ट्रीय एकता की स्थापना नहीं हो रहा है। सामाजिक सामानता के बिना मनुष्य किसी भी क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ सकता, अतः समानता के आदर्शो की पूर्ति होना आवश्यक है।

समाजवाद पर स्वामी जी का विचार :– स्वामी जी का विचार है कि चाहे प्राकृतिक असमानता कितना भी क्यों न हो लेकिन अवसर की समानता सभी को बराबर मिलना चाहिये। विवेकानंद जी जात, पात, छूआछूत, और सम्प्रदायवाद आदि सभी प्रकार के आमानता के विरूद्ध थे। उन्होनें कहा कि राष्ट्र की गौरव महलों से नहीं झोपड़ी से आना होगा। उन्होनें गांव–गांव जाकर गरीबों की सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

अधिकार और कर्तव्य संबंधी विचार :– स्वामी जी अधिकारों की अपेक्षा कर्तव्यों की बात करते थें। वे चाहते थे कि सभी व्यक्ति अपने कर्तव्यों की पालन करने में इमानदारी बरते। स्वामी जी चाहते थे कि सभी लोग अधिकार की मांग तो करते है किन्तु कर्तव्य की पालन में उदासीनता दिखाते है।

निर्भयता का सिद्धांत :– स्वामी विवेकानंद जी ने संदेश दिया कि भारतवासी शक्ति, निर्भिकता और आत्मबल के आधार पर ही विदेशी ताकतों से लोहा लिया जा सकता है और अपने देश को आजाद किया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद जब भारतीयों को कमजोर, कायर और आलसी देखते थे तो उनका खून खौल जाता था वे कहते थे कि मैं कायरों को घृण की नजर से देखता हुं। स्वामी जी शक्ति और निर्भयता का दर्शन वेदान्त के व्याख्या के आधार पर प्रस्तुत किया। उन्होनें नवयुवकों का विश्वास दिलाया कि कर्ममय एवं स्वार्थ रहित जीवन से ही व्यक्ति और राष्ट्र दोनो का विकास होता है। उन्होनें लागों को आत्मा की सबलता का पाठ पढ़ाया। स्वामी जी ने कहा जो कुछ भी तुम्हें भौतिक रूप से, बौद्धिक रूप से तथा आध्यात्मिक रूप से कमजोर बनाता है, उसे तुम जहर समझो। उसमें जीवन नहीं तो वह कभी सत्य नहीं हो सकता। सत्य बल देता है, आत्म शक्ति को बढ़ाता है, सत्य शुद्ध है, सत्य सम्पूर्ण ज्ञान है। स्वामी विवेकानंद ने भारतीयों को ललकारा '' अगर दुनिया में कोई पाप है तो वह दुर्बलता, दुर्बलता को दूर करो, दुर्बलता पाप है, दुर्बलता मृत्यु है। अब हमारे देश को जिन वस्तु की आवश्यकता है वह प्रबल मन की फौलादी ताकत है, जो आत्मविश्वास से लबालब भरा हुआ है।''

व्यक्ति के गौरव में विश्वास :– राष्ट्र निर्माण में नैतिक गुणों की अहम भूमिका होती है। इसलिये देश के प्रत्येक नागरिकों में नैतिक भावना कुट–कुट कर भरा होना चाहिये। जब लोगों में अच्छे गुणों का विकास होगा तभी मानव में सम्मान और पुरूषत्व की भावना का जागरण होगा। स्वामी जी कहते है कि ''मानव स्वभाव की गौरव को कभी मत भूलो। हममे से प्रत्येक व्यक्ति यह घोषण करे कि मैं ही परमेश्वर हुं परमेश्वर से बड़ा कोई है न होगा। अर्थात मैं ही सबकुछ हुँ।

स्वामी विवेकानंद के धार्मिक विचार :–

राष्टवाद का धार्मिक एवं आध्यात्मिक सिद्धांत :– विश्व के सम्मुख भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता की श्रेष्ठता और हमारी परम्परागत सर्वोपरिता की साहसी घोषणा करने से उन हिन्दूओं में नवीन प्रेरणा और शक्ति का संचार हुआ जो युरोपीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मुख हिनता का भाव महशूस करते थे। अब हर भारतीय में आत्म विश्वास जागृत हुआ जिससे उनके अंदर राष्ट्रीयता की भावना का पुनरूत्थान हुआ।

विश्व बंधुत्व का समर्थन :– स्वामी जी वसुदैवकुटुम्बकम् के सिद्धांत पर काम करते थे। मानव को हम किसी धर्म, जाति, क्षेत्र में बांध कर नहीं रख सकते। सारा संसार उसका है, उसका घर है। सब एक परिवार है इस कारण से मानव मानव में किसी प्रकार का भेद भाव नहीं किया जा सकता।

गुरूकुल शिक्षा का समर्थन :– शिक्षा में धार्मिक शिक्षा का समर्थन किया, शिक्षा के पाठ्यक्रम में धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाना चाहिये। ताकि विशुद्ध भारतीय शिक्षा पद्धति का निर्माण हो सके। इस कारण से अंग्र. जी शिक्षा का विरोध किया।

भारतीय युवकों में राष्ट्रवाद एवं आत्मविश्वास की प्रेरणा :– स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरणा स्रोत रहे। युवाओं को भारत की आजादी के लिये आह्वान किया। हमारे देश का उज्ज्वल भविष्य हमारे देश के युवाओं के कंधो पर टिका है। उन्होंने युवाओं को जगाने के लिये कहा क्या कारण है कि हमारे देश को मुठ्ठी भर लोग राज कर रहे है और हम तैंतिस करोड़ लोग उनके गुलाम बन कर हाथ में हाथ धरे बैठे हैं। हमे अपने देश, राष्ट्र, समाज पर गर्व होना चाहिये।

राष्ट्रीय आत्म चेतना के उद्दीपक :– विवेकानंद भारत को सिर्फ अपना देश नहीं मानते थे बल्कि अपनी जननी, जन्म भूमि, अपने मां से भी बढ़कर मानते थे। अपने भाषण में भारत के पददलित, सामाजिक रूप से बहिस्कृत एवं पौरूषहीन जनता में आत्म ज्ञान जागृत कर राष्ट्र के पति सर्मपण करने की साहस पैदा किया।

उग्र राष्ट्रवाद के समर्थक :– स्वामी विवेकानंद उग्र राष्ट्रवाद का समर्थन किया, हिन्दू धर्म को हथियार के रूप में प्रयोग कर हिन्दूत्व की भावना को जगाया। उसे देश और समाज कल्याण में प्रयोग कर अपने राष्ट्रशक्ति में अभिवृद्धि करना ही मूल लक्ष्य था।

निष्कर्ष :– स्वामी विवेकानंद धार्मिक विचारक होने के बावजूद उनके अंदर धार्मिक संकिर्णता नहीं था। उनके द्वारा धर्म का सहारा इसलिये लिय गया कि धर्म नैतिक आस्था का केन्द्र होता है। धर्म नैतिक पुनरूत्थान के लिये जरूरी होता है, धर्म में आत्म शक्ति का बड़ा अंर्तबल मौजूद होता है। इस कारण से धर्म के माध्यम से लोगों को जागृत कर उनके अंदर देश प्रेम की भावना उत्पन्न करना और अपने जननी जन्म भूमि के मुक्ति के लिये में एकता स्थापित करना किन्तु इसमें सबसे बड़ा रोड़ा धार्मिक बिखराव और जाति व्यवस्था, छुआछूत, ऊंच–नीच की भावना के कारण से राष्ट्रीय एकता की स्थापना में अवरोध उत्पन्न हो रहा था। स्वामी जी समझ चुके थे कि जब तक धार्मिक संकीर्णता समाप्त नहीं होगा। तब तक सामाजिक एकता की स्थापना नहीं होगी। और हमारे देश में फूट रहेगा उसका लाभ बाहर के मुठ्ठी भर लोगो को मिलता रहेगा। इसके लिये यह जरूरी है कि अपने आंगन यानि कि अपने देश और समाज में फैले हुये गंदगी को पहले साफ किया जाये। जातिवाद, धार्मिक संकीर्णता, अंधविश्वास, स्त्री दासता, छुआछूत आदि बुराईयों को समाप्त कर एक ऐसे अखंड भारत का निर्माण करें जिसमें धर्म लोगों का कल्याण करने में सहायतार्थ हो, युवाओं में आत्मविश्वास पैदा करे, राष्ट्रीय एकता में सहायक हो, मानव समाज में शांति और सौहार्द हो। स्वामी विवेकानंद जी कहते है कि सच्ची सेवा गरीबों की सेवा है। हमारे समाज के सभ्रांत वर्ग एवं राजनीतिक समाज को गरीबों के कल्याण में काम करना चाहिये। राजनीतिक समाज का पूरा ध्येय सरकार बनाना एवं सरकार गिराना नहीं होना चाहिये। राजनेताओं का पूरा फोकस समाज के समस्याओं का निवारण करने में होना चाहिये। प्रत्येक विधायक सांसद को अपने क्षेत्र के लोगों का कल्याण करना होना चाहिये। देश के सामाजिक, राजनीतिक समस्या क्या है और उसका निवारण कैसे हो सकता है। सांसद और विधायक को अपने क्षेत्र के जनता का सच्चा प्रतिनिधि बन कर काम करना चाहिये। वह उस क्षेत्र के निवासियों का आदर्श रहे और कभी भी सत्ता का घमण्ड न रहे। किन्तु आम तौर पर देखा गया है कि जन प्रतिनिधि निर्वाचित हो जाते है तो वह धीरे–धीरे जनता से दूरी बना लेते है। जिससे जनता के मन में अविश्वास की भावना उत्पन्न होता है। जनता अपने ही प्रतिनिधि को मिलने से कतराता है। ये किस प्रकार के समाज सेवा है जो अपने लोगों से अपने आप को सुपीरियर समझता है। ये कैसा प्रजातंत्र जो एलिटतंत्र का प्रतिनिधित्व करते है। कभी आम जन की भाावना का सम्मान ही नहीं करते। स्वामी जी पूरे विश्व में सहिष्णुता, समानता, एकता, प्रेम, करूणा, सेवा, दान, लैंगिक समानता, गरीबी उन्मूलन, पर्यावरण की संरक्षण की बात दुनिया भर में फैलाई। स्वामी विवेकानंद राजनीतिक आंदोलन के पक्ष में नहीं थे, तथापि वे हृदय से चाहते थे कि भारत एक शक्तिशाली देश और गतिशील राष्ट्र का निर्माण हो। वे धर्म को राष्ट्रीय जीवन रूपी संगीत का स्थाई स्वर मानते थे। स्वामी जी के अनुसार आदर्श राज्य समानता पर आधारित होना चाहिये जिसमें सब लोगों का आत्म विकास की चहुमुखी अवसर प्राप्त होनी चाहिये।

संदर्भ ग्रथ :–

1. **प्रभाकर माचवे : आधुनिक भारत के विचारक**
2. **गंगादत्त तिवारी : आधुनिक राजनीतिक चिंतन का इतिहास**
3. **डॉ. एस. राधाकृष्णन : धर्म और समाज, राजपाल एण्ड संस दिल्ली**
4. **श्री आविन्द : मानव एकता का आदर्श**

5. श्री अरविन्द : मानव से अतिमानव की ओर
6. एस. बी. मुखर्जी : गांधी एण्ड मार्क्स सम बेसिक डिफरेन्सेज
7. प्रबुद्ध भारत : श्री रामकृष्ण मिशन, स्टुडेण्टस होम कलकत्ता
8. वी. एस. निर्वाणे : मार्डन इण्यिन थाट
9. आर. सी मजूमदार : स्वामी विवेकानंद सिन्टेनरी वालूम
10- रोमारोला : दि लाइफ ऑफ रामकृष्ण–1 अद्वैत आश्रम, मायावती, अल्मोड़ा